SWETA DUBEY
ASST.PROFESSOR,
GSCW B.Ed., PEDAGOGY OF SCHOOL SUBJECT
ECONOMICS,SEM-2, PAPER-VII A

TOPIC- ASSINGNMENT TECHNIQUE, ILLUSTRATION TECHNIQUE & EXPLANATION TECHNIQUE

Scanned with CamScanner

Assignment Technique

कार्य निर्धारण एक प्रयोगात्मक प्रविधि है। सामान्यत: इसका प्रयोग पाठ की समाप्ति के उपरान्त किया जाता है, कार्य निर्धारण दो रूपों में किया जाता है—

प्रथम परम्परागत रूप है, जिसके अंतर्गत शिक्षक छात्रों को घर से करके लाने के लिये कुछ कार्य निर्धारित कर देता है, इसे आजकल हम गृहकार्य के नाम से पुकारते हैं, **द्वितीय** रूप आधुनिक रूप है, इसके अन्तर्गत घर से करके लाने के लिये कोई कार्य नहीं दिया जाता है वरन्

Scanned with CamScanner

विद्यालय समय चक्र के अन्तर्गत ही निर्धारित कार्य को पूरा करने के लिये एक विशेष कालांश की व्यवस्था होती है, छात्र इस कालांश के अन्तर्गत अध्यापकों की देखरेख में निर्धारित कार्य को पूरा करते हैं।

आधुनिक युग में कार्य निर्धारण की परम्परागत प्रणाली को दोषपूर्ण समझा जाता है। यह माना जाने लगा है कि घर से कार्य करके लाना वास्तविक शिक्षण प्रदान नहीं करता है। छात्र निर्धारण कार्य करने की वैज्ञानिक विधि से अपरचित रहते हैं। वे योजनाबद्ध कार्य नहीं कर पाते हैं क्योंकि घर पर कोई अच्छा पथ-प्रदर्शक उन्हें उपलब्ध नहीं होता है। फलतः यह निष्कर्ष निकाला गया है कि विद्यालय में ही अध्यापकों की देखरेख तथा पथ-प्रदर्शक में छात्रों के निर्धारित कार्य को सम्पन्न करना चाहिये। घर पर वह अपने माता-पिता की अवैज्ञानिक सहायता नहीं ले सकता है, यहाँ पर तो अत्यन्त कुशल एवं अनुभवी अध्यापक उसे प्रतिक्षण युक्त अत्यन्त मूल्यवान् सहायता प्रदान करने को तत्पर रहते हैं।

परम्परागत कार्य निर्धारण तथा आधुनिक कार्य निर्धारण में इस अन्तर के अतिरिक्त एक अन्तर और भी है, कार्य निर्धारण के परम्परागत रूप में छात्रों को घर से करके लाने के लिये पुस्तक के कुछ अनुच्छेद, पृष्ठ सवाल अथवा प्रश्न, पाठ अथवा अभ्यास मात्रायें दे दी जाती थीं। किन्तु आधुनिक युग में समस्या अथवा कोई क्रिया कार्य निर्धारण के रूप में दे दी जाती है। इस प्रकार इन दोनों ही रूपों में मनोवैज्ञानिक तथा दार्शनिक दोनों ही दृष्टिकोण से अन्तर है। परम्परागत कार्य निर्धारण पूरा ध्यान रखता है।

कार्य निर्धारण के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. कार्य निर्धारण के उद्देश्य (Aims of Good Assignment)

(1) पाठ सामान्य एवं विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति हेतु।

(2) छात्रों को विभिन्न शैक्षणिक क्रियाओं में लिप्त रखने हेतु।

(3) अध्ययन करने के लिये उचित निर्देशन देने के लिये।

(4) छात्रों में स्वाध्याय की आदत का विकास करने के लिये।

(5) छात्रों को विधिवत् अध्ययन करना सिखलाने के लिये।

2. अच्छे कार्य निर्धारण की विशेषताएँ (Peculiarities of Good Assignment)

(1) स्पष्टता, (2) निश्चितता, (3) रोचकता, (4) प्रेरणा, (5) सहकारी भावना, (6) सार्थकता, (7) पूर्वज्ञान से सम्बन्धबद्धता, (8) व्यक्तिगत विभिन्नताओं के साथ अनुरूपता, (9) अर्न्तदृष्टि, सूझ का विकास करने की क्षमता, (10) शैक्षणिक क्रिया तथा (11) मानसिक स्तर के अनुसार कठिनाई स्तर।

3. सुझाव (Suggestion)—कार्य का निर्धारण करते समय अध्यापक को निम्नलिखित बिन्दुओं को सदैव ध्यान में रखना चाहिये।

(1) कार्य निर्धारण करते समय अध्यापक को समय तत्त्व को सदैव ध्यान में रखना चाहिये। निर्धारित कार्य का समय कक्षा की आयु तथा मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर निर्धारित किया जाना चाहिये। दूसरे शब्दों में समय की मात्रा मनोवैज्ञानिक होनी चाहिये।

(2) निर्धारित कार्य का कठिन स्तर भी छात्रों की आयु तथा मानसिक अवस्था को ध्यान में रखकर किया जाये।

(3) सामान्यतया कार्य का निर्धारण पाठ के अन्त में किया जाये, कार्य निर्धारण आज के

Scanned with CamScanner

पढ़ाये पाठ में से ही दिया जाना चाहिये, कभी-कभी विशेष समस्या आ जाने पर कार्य का निर्धारण पाठ के बीच में भी किया जा सकता है।

(4) निर्धारित कार्य की अन्त में जाँच अथवा मूल्यांकन अवश्य करना चाहिये।

(5) अध्यापक को निर्धारित किये जाने वाले कार्य का, उसके तथा उससे सम्बन्धित सहायक सामग्री का विस्तृत ज्ञान होना चाहिये।

Scanned with CamScanner

Illustration Technique

शिक्षण में इस प्रविधि का विशेष महत्त्व है। इस शिक्षण प्रविधि में उदाहरणों की सहायता से पाठ्य-विषय पर प्रकाश डाला जाता है। आधुनिक शिक्षा में इन उदाहरणों पर अधिक बल दिया जा रहा है। उदाहरण, छात्रों के दैनिक जीवन से सम्बन्ध रखते हैं, छात्र उनसे परिचित होते हैं, अतः इनकी सहायता से कठिन और अज्ञात विषय को सरल और रोचक ढंग से छात्रों के समक्ष रखा जाता है। जिससे वे सफलतापूर्वक अपेक्षित विषय का ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। अप्रत्यक्ष और सूक्ष्म तथ्यों का उदाहरणों की सहायता से प्रत्यक्ष और मूर्तरूप दे दिया जाता है, इससे छात्रों को समझाने में कठिनाई नहीं होती।

यह प्रविधि अधिक मनोवैज्ञानिक मानी जाती है इसमें छात्रों की बुद्धि को विचारात्मक तथा चिन्तनशील बनाने की शक्ति है इससे छात्रों का मानसिक विकास होता है। उदाहरण दो प्रकार के हो सकते हैं—

मौखिक उदाहरण तथा प्रदर्शनात्मक उदाहरण।

मौखिक उदाहरण—मौखिक उदाहरण से अध्यापक छात्रों के मस्तिष्क में शब्दों द्वारा प्रस्तुत विषय का चित्र उपस्थित करने का प्रयास करता है, वह विषय को सरल और रोचक रूप में छात्रों के समक्ष रखता है, उदाहरण देते समय यह ध्यान में रखना पड़ता है कि उदाहरण छात्रों के देखे सुने हों ताकि उनकी व्याख्या स्वयं छात्रों के द्वारा करायी जा सके फिर उसके आधार पर प्रस्तुत विषयों को समझाया जाय, ध्यान देने योग्य बातें—

(1) उदाहरण की भाषा सरल तथा रोचक होनी चाहिये तथा दृष्टान्त प्रत्यक्ष विषयों से सम्बन्धित होनी चाहिये।

(2) उदाहरण इस प्रकार का होना चाहिये कि छात्र सुगमतापूर्वक समझ सके, साथ ही साथ उदाहरणों की अधिकता भी नहीं होनी चाहिये।

प्रदर्शनात्मक उदाहरण—कभी-कभी छोटे बालकों को मौखिक उदाहरणों द्वारा सूक्ष्म बातों का ज्ञान कराना कठिन होता है। उस दशा में अध्यापक को स्थूल उदाहरण सामने रखना पड़ता है। इन उदाहरणों को आकर्षक और रोचक होना चाहिये, इससे छात्रों के मस्तिष्क में विषय का स्थायी ज्ञान हो जाता है। ऐसी स्थिति में चित्र, मानचित्र, रेखाचित्र, ग्राफ तथा चार्ट आदि दिखाये जाने चाहिये। अध्यापक अर्थशास्त्र के सूक्ष्म विषयों का ज्ञान कराने के लिये इन वस्तुओं को दिखाकर समझा सकता है। इनके अतिरिक्त, यदि अध्यापक आवश्यक समझें तो विषय के अनुकूल वस्तुओं को तैयार करके भी उदाहरण प्रस्तुत कर सकता है।

विचारणीय विषय यह है कि उदाहरण सरल और आकर्षक हो ताकि छात्रों को ग्रहण करने में कठिनाई न हो और उनसे अभीष्ट उद्देश्य की प्राप्ति में सहायता मिल सके। एक विषय का ज्ञान कराने में कई उदाहरणों को नहीं रखना चाहिये क्योंकि इसमें सन्देह और भ्रम उत्पन्न होने की सम्भावना बनी रहती है, उदाहरण देते समय स्पष्टता पर अधिक ध्यान देना चाहिये।

Scanned with CamScanner

कभी-कभी विषय-वस्तु को सरल, सुगम तथा बोधगम्य बनाने हेतु अध्यापक को व्याख्या प्रविधि का सहारा लेना पड़ता है। सामान्य पद्धति से छात्र किन्हीं-किन्हीं स्थलों पर विषय-वस्तु को आत्मसात् करने में असफल रहते हैं। कहीं-कहीं कोई भावात्मक स्थल आ जाता है अथवा जटिल दुरूह-विषय-वस्तु आ जाती है। तब इन स्थलों पर अध्यापक विषय-वस्तु को व्याख्या के माध्यम से अपने छात्रों को समझा सकता है। व्याख्या किसी वस्तु को सरलतम एवं अधिकतम रूप से प्रस्तुत करने की एक कला है। फलतः व्याख्या के समय अध्यापक छात्रों को सरलतम भाषा में अधिक से अधिक विषय-वस्तु बतलाता है। व्याख्या के द्वारा प्रस्तुत विषय-वस्तु को स्पष्ट किया जाता है। व्याख्या करते समय अध्यापक का उद्देश्य अपना पाण्डित प्रदर्शन करना न होकर विषय-वस्तु को सरलतम रूप में प्रस्तुत करना होना चाहिये।

सरल व्याख्या करना बड़ा ही कठिन काम है। इसके लिये अध्यापक को विषय-वस्तु का पर्याप्त एवं ठोस ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। इस ज्ञान के अभाव में अध्यापक, कभी भी सफल व्याख्याता नहीं बन सकता है। अध्यापक को व्याख्या करने के लिये पर्याप्त भाषा ज्ञान होना आवश्यक है। अपने भाषा ज्ञान के द्वारा अध्यापक विषय-वस्तु को विभिन्न प्रकार की शैली में तथा विभिन्न प्रकार के शब्दों से व्यक्त कर सकता है। दूसरे शब्दों में अध्यापक के पास अपने विचारों को सरलतम रूप मे व्यक्त करने की क्षमता होनी चाहिये।

व्याख्या करते समय अध्यापक को कुछ विशेष बातों को ध्यान में रखना चाहिये। व्याख्या सदैव वैज्ञानिक विधि से ही प्रस्तुत की जानी चाहिये। भाषा सरल तथा बोधगम्य हो। व्याख्या को यथासम्भव सरल तथा आकर्षक तुलना का भी सहारा लेना पड़ता है। अध्यापक को व्याख्या करते समय उन सभी शिक्षण सूत्रों का अनुसरण करना चाहिये, जिनका उल्लेख पीछे एक अध्याय में किया गया है।

व्याख्या लम्बी नहीं होनी चाहिये। लम्बी व्याख्या छात्रों में नीरसता लायेगी। नीरसता दूर करने के लिये यह आवश्यक है कि छात्रों से प्रश्न पूछकर नीरसता को काफी मात्रा में दूर किया जा सकता है। व्याख्या करते समय अध्यापक श्यामपट, लपेटफलक तथा अन्य सहायक सामग्री का भी प्रयोग कर सकता है। इससे व्याख्या में रोचकता का समावेश होता है।

Scanned with CamScanner